विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत व्याकरण 24 जून 2020

वर्ग षष्ठ **राजेश कुमार पाण्डेय**

लिङ्ग

लिङ्ग शब्द का शाब्दिक का अर्थ है - चिह्न। सामान्यतया चिह्न पुरूषवाची, स्त्रीवाची आदि शब्दों का बोध कराते हैं, वे लिङ्ग कहलाते हैं। संस्कृत में शब्दों के तीन लिङ्ग होते हैं -

(क) **पुंल्लिङ्ग**

(ख) **स्त्रीलिङ्ग**

(ग) **नपुंसकलिङ्ग**

लिङ्ग

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
बालकः	**लता**	**फलम्**

पुंल्लिङ्ग – वे शब्द जिससे पुरुष जाति का ज्ञान हो पुंल्लिङ्ग का कहलाते हैं जैसे -

एक अध्यापक

शिक्षकः

स्त्रीलिङ्ग - स्त्री जाति का बोध करने वाला शब्दों को स्त्रीलिंग कहते हैं।

एक अध्यापिका

शिक्षका

नपुंसकलिङ्ग - वे शब्द जो न तो पुंल्लिङ्ग के अंतर्गत आते हैं और न ही स्त्रीलिंग के अंतर्गत आते हैं वे नपुंसकलिङ्ग कहलाते हैं जैसे -

एक फल

फलम्

विशेषण और विशेष्य का सम्बन्ध

विशेषण और विशेष्य का परस्पर घनिष्ठ संबंध होता है विशेषण शब्दों का लिङ्ग और वचन हमेशा विशेष्य के अनुसार ही होता है। विशेष्य यदि पुंल्लिङ्ग का होगा तो विशेषण भी पुंल्लिङ्ग का ही होगा। विशेष्य स्त्रीलिङ्ग का होगा तो विशेषण भी स्त्रीलिंग का ही होगा और विशेष्य यदि नपुंसकलिङ्ग का होगा ।तो विशेषण भीनपनपुंसकलिङग का ही होगा